वितस्ता

संपादिका :

प्रो. ज़ाहिदा जबीन

हिंदी विभाग, कश्मीर विश्वविध्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा
'ए+' ग्रेड श्रीनगर 190006

संपादक मण्डल :

प्रो. ज़ाहिदा जबीन

प्रो. रूबी जुत्शी

श्रीमती नायराह कुरैशी

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

परामर्श मण्डल-:

1. प्रो. विनोद कुमार तनेजा

पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय

2. प्रो. अब्दुल बिस्मिल्ला

हिंदी-विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय (नई दिल्ली)

3. प्रो. अनिल राय

डीन अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सामाजिक विज्ञान व मानवीय विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

4. प्रो. मोहन

अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

5. प्रो. चंद्रदेव यादव

हिंदी-विभाग जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय (नई दिल्ली)

6. प्रो. पवन अग्रवाल

आचार्य, हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

केवल हिंदी दिवस मानना ही काफ़ी नहीं है!

शारदा-पीठ एवं वितस्ता तट के आस-पास की भूमि 'कश्मीर' संस्कृत वांग्मय का गढ़ रही है। इस भूमि के लिए कभी बिल्हण ने कहा था- 'यह धरती कविता और केसर की भूमि है।' निश्चित रूप से कविता और केसर की भूमि की उपज न केवल कविताई है अपितु यहाँ का केसर भी विश्वविख्यात है। मेरी आँखें इस भूमि के लिए 'सौन्दर्य और साहित्य' की संज्ञा सुझाती हैं। 'सौन्दर्य' यह कि फ़ारसी के एक शायर ने कहा था-

अगर फ़िर्दौस बरूए ज़मीन अस्त,
हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त।

कश्मीर की इस धरती को 'पिर वआर' या 'रेशि वआर' के नाम से भी जाना जाता है अर्थात् यह धरती साधुओं, संतों, ऋषियों, मुनियों और महात्माओं की धरती है। यहाँ पीरों, फ़कीरों के साथ-साथ संस्कृत वांग्मय के मूर्धन्य विद्वानों ने भी जन्म लिया है। यह कालिदास, कल्हण, भामह, वामन, आनंदवर्धन, अभिनवगुप्त, कुंतक, क्षेमेन्द्र जैसे विद्वान पंडितों एवं काव्य शास्त्रियों की भूमि है। अतः यह हिंदी भाषा की जननी संस्कृत भाषा की धरती है।

कश्मीर घाटी की वितस्ता अपनी निरंतर प्रवाहमयता की परिचायक रही है, ठीक उसी प्रकार कश्मीर के प्राचीनतम विश्वविद्यालय, कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर के परास्नातक हिंदी विभाग की वार्षिक शोध-पत्रिका 'वितस्ता' भी निरंतर सन् 1965 ई. से प्रकाशित हो रही है। यह 49वां अंक है, आगे भी अंक प्रकाशित होते रहेंगे परन्तु क्या किसी हिंदी पत्रिका का प्रकाशित होना या वर्ष में एक-आध बार हिंदी-दिवस मनाना, हिंदी पखवाड़ा आदि का आयोजन करना काफ़ी है? प्रश्न कई सारे हैं, इन प्रश्नों के कई आयाम भी हैं। अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र कश्मीर जैसे प्रांत में हिंदी अधिक लोग नहीं जानते। यहाँ जानने से यह तात्पर्य है कि हिंदी भाषा व साहित्य का पढ़ना और लिखना। वास्तव में हिंदी भाषा की उन्नति व विकास केवल हिंदी-दिवस या हिंदी पखवाड़े मनाने से नहीं होगा। सत्य यह भी है कि कोई भी भाषा किसी विशेष दिवस मनाने की मोहताज नहीं होती। भाषा न कभी मरती है और न उसे मारा जा सकता है। सामान्यतः किसी भी भाषा को सामान्य जनता ही खाद-पानी प्रदान करती है, उसे शिखर पर पहुँचाती है, उसे नित-नए आयामों से अभिभूत करती है।

कश्मीर जैसे अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र में हिंदी भाषा की स्थिति यद्यपि संतोषजनक नहीं है अपितु भारत के अन्य अहिंदी भाषा-भाषी प्रान्तों से निश्चित रूप से बहुत बेहतर है। वास्तव में

किसी भी हिंदीतर क्षेत्र में इस भाषा को विकसित करना सामान्य जानता के साथ-साथ प्रशासनिक स्तर एवं राजनैतिक इच्छाशक्ति पर भी निर्भर करता है। हिंदी भाषा को संरक्षित व मूलभूत आधार पर संचारित तथा सुरक्षित करना वस्तुतः शारदा-पीठ को पुनः जीवित करने के समान होगा। भारत की प्राचीनतम संस्कृति की संवाहक व संचालक आदि भाषा 'संस्कृत' को परोक्ष रूप में प्राणवान करने के समान होगा। कश्मीर घाटी में रह-रहे हिंदी-भाषा प्रेमियों, शोधार्थियों-विद्यार्थियों के लिए एक नई भोर के समान होगा।

कश्मीर विश्वविद्यालय के आदरणीय कुलपति महोदया प्रो. नीलोफ़र खान, आदरणीय कुलसचिव प्रो. नसीर इक़बाल के सहयोग से ही यह अंक प्रकाशित करने में हम सफल हुए है। इस अंक हेतु रचनात्मक योगदानकर्ताओं ने भी सहर्ष अपनी रचनाएँ, समीक्षाएँ एवं शोध-आलेख प्रेषित किए, उनका भी हार्दिक आभार।

इस अंक में प्रकाशित रचनाओं व आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं, संपादक व संपादक-मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। आशा करती हूँ यह अंक भी हिंदी भाषा व साहित्य प्रेमियों, शोधार्थियों के लिए लाभप्रद साबित होगा। इस पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए अपने सुझाव लिखिए। वितस्ता पत्रिका के साथ जुड़िए और हिंदी साहित्य संसार को और समृद्ध करने में अपना योगदान दीजिए।

धन्यवाद

सम्पादिका

प्रो. ज़ाहिदा जबीन